ग़ौसे पाक का बचपन (Hindi)

Ghaus e Pak ka Bachpan

Haftawar Sunnaton Bhara Bayan

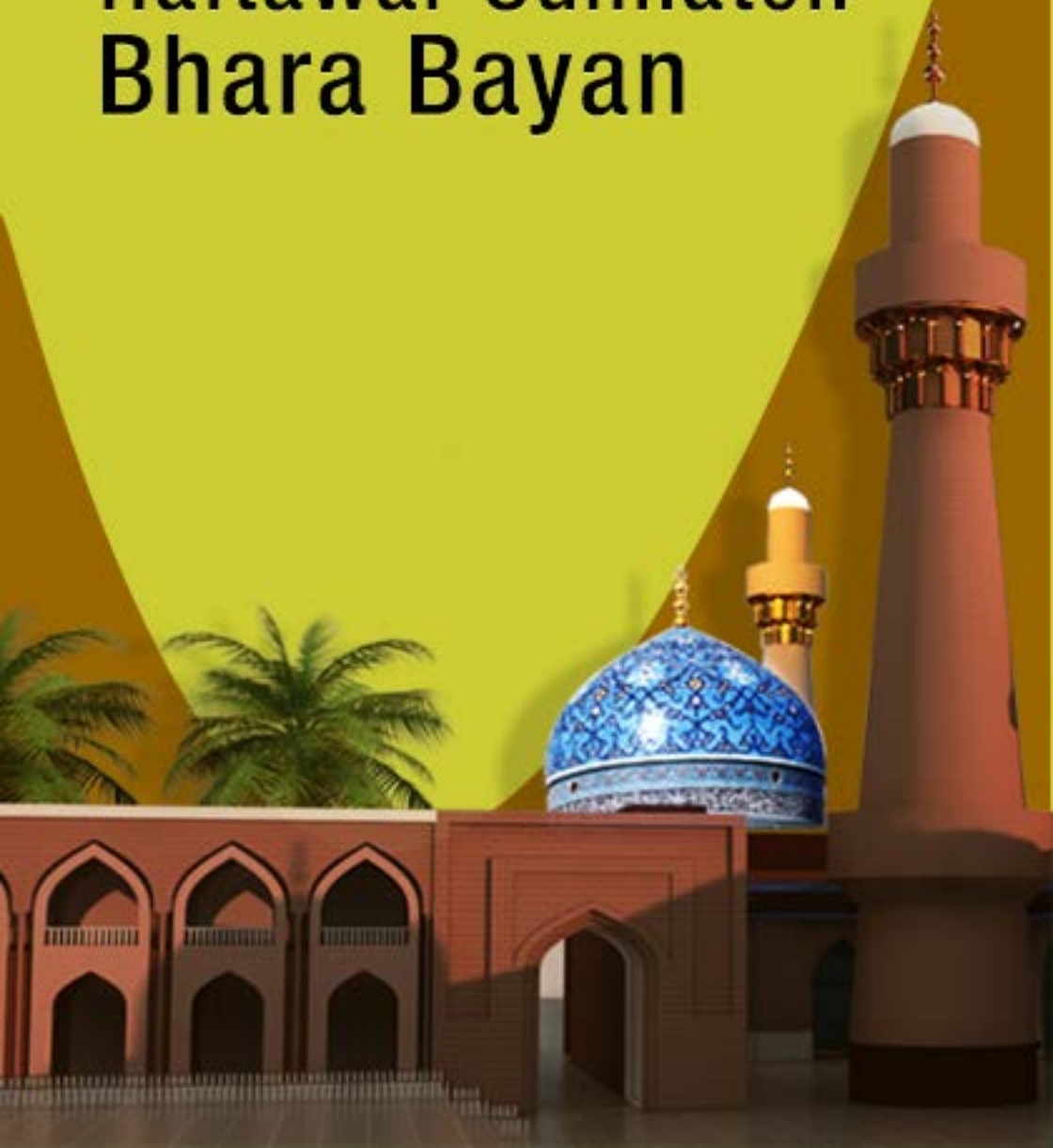

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

जन्नत का अनोखा फल

अमीरुल मोअमिनीन ह़ज़रते मौलाए काइनात, सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा, शेरे ख़ुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم से रिवायत है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में एक दरख़्त पैदा फ़रमाया है, जिस का फल सेब से बड़ा, अनार से छोटा, मख्खन से नर्म, शहद से भी मीठा और मुश्क से ज़ियादा ख़ुश्बूदार है । उस दरख़्त की शाख़ें तर मोतियों की, तने सोने के और पत्ते ज़बरजद के हैं । لَا يَاْكُلُ مِنْهَا اِلَّا مَنْ اَكْثَرَ مِنَ الصَّلَاةِ عَلٰى مُحَمَّدٍ (صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) उस दरख़्त का फल सिर्फ़ वोही खा सकेगा जो सरकारे वाला तबार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर कसरत से दुरूदे पाक पढ़ेगा । (الحاوی للفتاوی للسیوطی، ۲/۴۸)

का'बे के बदरुद्दुजा तुम पे करोड़ों दुरूद
तै़बा के शम्सुद्दुह़ा तुम पे करोड़ों दुरूद

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! दुरूदो सलाम पढ़ने वाला मुसलमान किस क़दर ख़ुश नसीब है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जन्नत में उस के लिये किस क़दर इन्आ़म व इकराम तय्यार कर रखे हैं । हमें भी चाहिये कि अपने प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ज़ियादा से ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़ कर अपने नामए आ'माल में नेकियों का ज़ख़ीरा करें ।

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मौल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 186)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हुसूले सवाब की ख़ातिर बयान सुनने से पहले अच्छी अच्छी निय्यतें कर लेते हैं। फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِه" मुसलमान की निय्यत उस के अमल से बेहतर है। (اَلْمُعْجَمُ الْكَبِير لِلطَّبَرَانِی ج ٦ ص ١٨٥ حديث ٥٩٤٢)

दो मदनी फूल :-

(1) बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अमले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

(2) जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

बयान सुनने की निय्यतें :

۞ निगाहें नीची किये ख़ूब कान लगा कर बयान सुनूंगा ۞ टेक लगा कर बैठने के बजाए इल्मे दीन की ता'ज़ीम की ख़ातिर जहां तक हो सका दो ज़ानू बैठूंगा ۞ ज़रूरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा करूंगा ۞ धक्का वग़ैरा लगा तो सब्र करूंगा, घूरने, झिड़कने और उलझने से बचूंगा ۞ صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب، اُذْكُرُوا الله، تُوبُوْا اِلَى الله वग़ैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की दिल जूई के लिये बुलन्द आवाज़ से जवाब दूंगा ۞ बयान के बा'द ख़ुद आगे बढ़ कर सलाम व मुसाफ़ह़ा और इनफ़िरादी कोशिश करूंगा। اِنْ شَآءَ الله عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب!　　　صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

बयान करने की निय्यतें :

मैं भी निय्यत करता हूं ۞ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा पाने और सवाब कमाने के लिये बयान करूंगा ۞ देख कर बयान करूंगा ۞ पारह **14** सूरतुन्नह़्ल, आयत **125** :

اُدْعُ اِلٰى سَبِيْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ

(**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** अपने रब की राह की त़रफ़ बुलाओ पक्की तदबीर और अच्छी नसीह़त से) और बुख़ारी शरीफ़ (की ह़दीस **4361**) में वारिद इस फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم بَلِّغُوْا عَنِّيْ وَلَوْ اٰيَةً या'नी "पहुंचा दो मेरी त़रफ़ से अगर्चे एक ही आयत

www.dawateislami.net

हो'' में दिये हुवे अह़काम की पैरवी करूंगा ۞ नेकी का हुक्म दूंगा और बुराई से मन्अ़ करूंगा ۞ अश्आ़र पढ़ते नीज़ अ़रबी, अंग्रेज़ी और मुश्किल अल्फ़ाज़ बोलते वक़्त दिल के इख़्लास पर तवज्जोह रखूंगा या'नी अपनी इ़ल्मिय्यत की धाक बिठानी मक़्सूद हुई तो बोलने से बचूंगा ۞ मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात, नीज़ अ़लाक़ाई दौरा बराए नेकी की दा'वत वग़ैरा की रग़बत दिलाऊंगा ۞ क़ह्क़हा लगाने और लगवाने से बचूंगा ۞ नज़र की ह़िफ़ाज़त का ज़ेहन बनाने की ख़ातिर ह़त्तल इमकान निगाहें नीची रखूंगा। اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बयान के मदनी फूल

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! आज मैं आप के सामने एक बहुत अ़ज़ीम और बुज़ुर्ग हस्ती के बचपन के ह़ालात व वाक़िआ़त बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगा, पहले एक ह़िकायत बयान करूंगा, फिर आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की विलादत से क़ब्ल के चन्द वाक़िआ़त और विलादते बा सआ़दत के बारे में कुछ मदनी फूल पेश करूंगा नीज़ आप के बचपन से मुतअ़ल्लिक़ ह़ालात व वाक़िआ़त और करामात और आख़िर में घर में आने जाने की सुन्नतें और आदाब बयान करूंगा اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ। आइये पहले एक ह़िकायत सुनते हैं।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मुन्ने की लाश

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ अपने रिसाले **''मुन्ने की लाश''** में एक ह़िकायत नक़्ल फ़रमाते हैं :

ख़ानक़ाह में एक बा पर्दा ख़ातून अपने मुन्ने की लाश चादर में लिपटाए सीने से चिमटाए ज़ारो क़ित़ार रो रही थी। इतने में एक **''मदनी मुन्ना''** दौड़ता हुवा आता है और हमदर्दाना लहजे में उस

www.dawateislami.net

ख़ातून से रोने का सबब दरयाफ़्त करता है। वोह रोते हुवे कहती है : बेटा ! मेरा शोहर अपने लख़्ते जिगर के दीदार की ह़सरत लिये दुन्या से रुख़्सत हो गया है। येह बच्चा उस वक़्त पेट में था और अब येही अपने बाप की निशानी और मेरी ज़िन्दगानी का सरमाया था, येह बीमार हो गया, मैं इसे इसी ख़ानक़ाह में दम करवाने ला रही थी कि रास्ते में इस ने दम तोड़ दिया है। मैं फिर भी बड़ी उम्मीद ले कर यहां ह़ाज़िर हो गई कि इस ख़ानक़ाह वाले बुज़ुर्ग की विलायत की हर त़रफ़ धूम है और इन की निगाहे करम से अब भी बहुत कुछ हो सकता है मगर वोह मुझे सब्र की तल्क़ीन कर के अन्दर तशरीफ़ ले जा चुके हैं। येह कह कर वोह ख़ातून फिर रोने लगी। मदनी मुन्ने का दिल पिघल गया और उस की रह़मत भरी ज़बान पर येह अल्फ़ाज़ खेलने लगे : **''मोह़तरमा ! आप का मुन्ना मरा हुवा नहीं बल्कि ज़िन्दा है, देखो तो सही वोह ह़रकत कर रहा है!''** दुख्यारी मां ने बेताबी के साथ अपने मुन्ने की लाश पर से कपड़ा उठा कर देखा तो वोह सच मुच ज़िन्दा था और हाथ-पैर हिला कर खेल रहा था। इतने में ख़ानक़ाह वाले बुज़ुर्ग अन्दर से वापस तशरीफ़ लाए, बच्चे को ज़िन्दा देख कर सारी बात समझ गए और लाठी उठा कर येह कहते हुवे **''मदनी मुन्ने''** की त़रफ़ लपके कि तू ने अभी से तक़्दीरे ख़ुदावन्दी عَزَّوَجَلَّ के सरबस्ता राज़ खोलने शुरूअ़ कर दिये हैं ! मदनी मुन्ना वहां से भाग खड़ा हुवा और वोह बुज़ुर्ग उस के पीछे दौड़ने लगे, **''मदनी मुन्ना''** यका यक क़ब्रिस्तान की त़रफ़ मुड़ा और बुलन्द आवाज़ से पुकारने लगा : ऐ क़ब्र वालो ! मुझे बचाओ ! तेज़ी से लपकते हुवे बुज़ुर्ग अचानक ठिठक कर रुक गए क्यूंकि क़ब्रिस्तान से तीन सो मुर्दे उठ कर उसी **''मदनी मुन्ने''** की ढाल बन चुके थे और वोह **''मदनी मुन्ना''** दूर खड़ा अपना चांद सा चेहरा चमकाता मुस्कुरा रहा था। उस बुज़ुर्ग ने बड़ी ह़सरत के साथ **''मदनी मुन्ने''** की त़रफ़ देखते

www.dawateislami.net

हुवे कहा : बेटा ! हम तेरे मर्तबे को नहीं पहुंच सकते, इस लिये तेरी मरज़ी के आगे अपना सरे तस्लीम ख़म करते हैं !

(مُلَخَّص از الحقائق فی الحدائق ج ا ص ۱۴۲ وغیرہ مکتبۃ اویسیہ رضویہ، بہاولپور، پاکستان)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप जानते हैं वोह **"मदनी मुन्ना"** कौन था ? उस मदनी मुन्ने का नाम सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर था और आगे चल कर वोह **गौसुल आ'ज़म** عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللّٰہِ الۡاَکۡرَم के लक़ब से मश्हूर हुवे । और वोह बुज़ुर्ग उन के नानजान ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह सूमई عَلَیۡہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الۡقَوِی थे ।

क्यूं न क़ासिम हो कि तू इब्ने अबिल क़ासिम है
क्यूं न क़ादिर हो कि मुख़्तार है बाबा तेरा

(ह़दाइके़ बख़्शिश, स. 20)

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे ग़ौसे पाक رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की शान बहुत अरफ़अ़ व आ'ला है, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ज़बरदस्त वली और औलिया के सरदार हैं । इस ह़िकायत से हमें मा'लूम हुवा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ अपने मह़बूब बन्दों को ऐसी ज़बरदस्त क़ुव्वत व ताक़त अ़ता फ़रमाता है कि मुर्दे भी जिला (या'नी ज़िन्दा कर) दिया करते हैं, आप رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ऐसी पाकीज़ा और बरगुज़ीदा शख़्सिय्यत हैं कि ख़ुद सय्यिदुल अम्बिया, ह़ज़रते मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और दीगर अम्बियाए किराम عَلَیۡہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام और मुख़्तलिफ़ औलियाए इ़ज़ाम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام ने विलादत से क़ब्ल आप की विलायत की बिशारतें दी हैं । चुनान्चे, मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ किताब **"ग़ौसे पाक के ह़ालात"** में है :

(1) सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की बिशारत

मह़बूबे सुब्ह़ानी, शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوۡرَانِی के वालिदे माजिद ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सालेह़ मूसा जंगी दोस्त رَحۡمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ

www.dawateislami.net

ने हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم की विलादत की रात मुशाहदा फ़रमाया कि सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मअ़ सहाबए किराम और औलियाए इ़ज़ाम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن उन के घर जल्वा अफ़रोज़ हैं और इन अल्फ़ाज़े मुबारका से उन को ख़िताब फ़रमा कर बिशारत से नवाज़ा : "ऐ अबू सालेह ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने तुम को ऐसा फ़रज़न्द (बेटा) अ़ता फ़रमाया है जो वली है और वोह मेरा और अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का महबूब है और उस की औलिया और अक़्ताब में वैसी ही शान होगी, जैसी अम्बिया और मुर्सलीन عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام में मेरी शान है।" (سیرتِ غوث الثقلین، ص ۵۵ بحوالہ تفریح الخاطر)

(2) अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की बिशारतें

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के वालिदे माजिद को नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इ़लावा जुम्ला अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने भी येह बिशारत दी कि तमाम औलियाउल्लाह तुम्हारे फ़रज़न्दे अर्जमन्द के मुतीअ़ (फ़रमांबरदार) होंगे और उन की गर्दनों पर इन का क़दमे मुबारक होगा। (سیرتِ غوث الثقلین، ص ۵۵ بحوالہ تفریح الخاطر)

जिस की मिम्बर बनी गर्दने औलिया
उस क़दम की करामत पे लाखों सलाम

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 315)

(3) ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की बिशारत :

ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ से पहले के औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللّٰہُ السَّلَام में से कई एक ने आप की आमद की बिशारत दी। चुनान्चे, ह़ज़रते सय्यिदुना ह़सन बसरी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने अपने ज़मानए मुबारक से ले कर ह़ज़रते शैख़ मुह़य्युद्दीन सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی के ज़मानए मुबारक तक तफ़्सील से ख़बर दी कि जितने भी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के औलिया गुज़रे हैं, सब ने शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ النُّوْرَانِی (के आने की) की ख़बर दी है। (سیرت غوث الثقلین، ص ۵۸) (ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. 21)

www.dawateislami.net

इसी त़रह़ ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू बक्र बिन हवारा رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه ने एक रोज़ अपने मुरीदीन से फ़रमाया : अ़न क़रीब इराक़ में एक अ़जमी शख़्स जो कि अल्लाह عَزَّوَجَلَّ और लोगों के नज़्दीक आ़ली मर्तबत होगा, उस का नाम अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه होगा और बग़दाद शरीफ़ में सुकूनत इख़्तियार करेगा, قَدَمِیْ هٰذِهٖ عَلٰی رَقَبَةِ کُلِّ وَلِیِّ اللهِ (या'नी मेरा येह क़दम हर वली की गर्दन पर है) का ए'लान फ़रमाएगा और ज़माने के तमाम औलियाए किराम رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن उस के फ़रमांबरदार होंगे। (بہجۃ الاسرار، ذکر اخبار المشائخ عنہ بذالک، ص۱۴) (ग़ौसे पाक के ह़ालात, स. **23**)

जो वली क़ब्ल थे या बा'द हुवे या होंगे
सब अदब रखते हैं दिल में मेरे आक़ा तेरा

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 23)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे ग़ौसे पाक, शहनशाहे बग़दाद رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की शान किस क़दर बुलन्दो बाला है कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه के पैदा होते ही ग़ैब बताने वाले आक़ा, मक्की मदनी मुस्त़फ़ा, ह़बीबे किब्रिया, मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाह صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने आप के बुलन्द मर्तबे और शानो अ़ज़मत की बिशारत दे दी थी नीज़ येह भी बता दिया था कि आप رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه तमाम औलिया के सरदार होंगे, इसी लिये आप के पैदा होते ही बरकात व तजल्लिय्यात का ज़ुहूर शुरूअ़ हो गया।

विलादते बा सआ़दत

हुज़ूर ग़ौसे पाक رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه यकुम रमज़ान बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक सि. **470** हि. को बग़दाद शरीफ़ के क़रीब क़स्बा जीलान में पैदा हुवे। (بهجة الاسرار، ص ۱۸۱)

ह़ैरत अंगेज़ वाक़िआ़त

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी, ग़ौसे समदानी, शहबाज़े ला मकानी, क़िन्दीले नूरानी, अल ह़सनी वल ह़ुसैनी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْه की विलादते बा सआ़दत के वक़्त बहुत से ह़ैरत अंगेज़

वाक़िआत ज़ुहूर पज़ीर हुवे, सब से बड़ी बात तो येह है कि जब आप रौनक़े अफ़रोज़े आलम हुवे (दुन्या में तशरीफ़ लाए), उस वक़्त आप की वालिदए माजिदा ह़ज़रते उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیۡھَا की उम्र साठ(60) साल की थी, इस उम्र में आम तौर पर औरतों को अवलाद से ना उम्मीदी हो जाती है, येह **अल्लाह** तआला का ख़ास फ़ज़्ल था कि इस उम्र में हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡاَکۡرَم उन के बत़्ने मुबारक से पैदा हुवे।

जिस रात ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत हुई, उस रात जीलान शरीफ़ की जिन औरतों के हां बच्चा पैदा हुवा, उन सब को **अल्लाह** करीम جَلَّ جَلَالُہٗ ने लड़का ही अ़ता फ़रमाया और हर नव मौलूद लड़का **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली बना। (मुन्ने की लाश, स. 5)

आप رَحۡمَۃُاللہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ की विलादत माहे रमज़ानुल मुबारक में हुई और पहले दिन ही से रोज़े रखना शुरूअ़ कर दिये, सह़री से ले कर इफ़्त़ार तक आप वालिदए मोह़तरमा का दूध न पीते थे। (بہجۃالاسرار،ص ۱۷۲)

ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म عَلَیۡہِ رَحۡمَۃُ اللہِ الۡاَکۡرَم की वालिदए माजिदा ह़ज़रते सय्यिदतुना उम्मुल ख़ैर फ़ातिमा رَحْمَۃُاللہِ تعالٰی عَلَیۡھَا फ़रमाया करती थीं : जब मेरा बेटा अ़ब्दुल क़ादिर पैदा हुवा तो वोह रमज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त मेरा दूध नहीं पीता था, अगले साल रमज़ान का चांद ग़ुबार की वजह से नज़र न आया तो लोग मेरे पास दरयाफ़्त करने के लिये आए तो मैं ने कहा कि "मेरे बच्चे ने दूध नहीं पिया।" फिर मा'लूम हुवा कि आज रमज़ान का दिन है और हमारे शहर में येह बात मश्हूर हो गई कि सय्यिदों में एक बच्चा पैदा हुवा है जो रमज़ानुल मुबारक में दिन के वक़्त दूध नहीं पीता।

(بہجۃالاسرار، ذکر نسبہ وصفتہ، ص ۱۷۲)

ग़ौसे आ'ज़म मुत्तक़ी हर आन में
छोड़ा मां का दूध भी रमज़ान में

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे पीरों के पीर, पीरे दस्तगीर, रौशन ज़मीर, क़ुत्बे रब्बानी, महबूबे सुब्हानी, पीरे लासानी, पीरे पीरां, मीरे मीरां, अश्शैख़ अबू मुहम्मद सय्यिद अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी قُدِّسَ سِرُّہُ الرَّبَّانِی की शान तो देखिये कि बचपन से ही आप के सीने में इबादत का जज़्बा मौजज़न था, हमें भी चाहिये कि अपने बच्चों को कम उ़म्री से ही नमाज़ रोज़े की आ़दत डालें, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस के बे शुमार फ़वाइद व बरकात ह़ासिल होंगे। आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बच्चा जैसे आठवें साल में क़दम रखे उस के वली (सर परस्त) पर लाज़िम है कि उसे नमाज़ रोज़े का हुक्म दे और जब ग्यारहवां साल शुरूअ़ हो तो वली (सर परस्त) पर वाजिब है कि सौमो सलात (नमाज़ रोज़ा न रखने) पर मारे, बशर्ते कि रोज़े की त़ाक़त हो और रोज़ा ज़रर न करे। (फ़तावा रज़विय्या जि. **10**, स. **345**) नीज़ हमें अपनी ह़ालत पर भी ग़ौर करना चाहिये कि एक त़रफ़ तो हमारे ग़ौसे पाक हैं कि जिन्हों ने शीर ख़्वारी या'नी दूध पीने के अय्याम में, गोद में ही रोज़ा रखा, जब कि हमारा ह़ाल येह है कि सिह़्ह़त मन्द होने के बा वुजूद भी مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ रमज़ानुल मुबारक के फ़र्ज़ रोज़े क़ज़ा कर देते हैं। बा'ज़ लोग शुरूअ़ शुरूअ़ में तो पाबन्दी करते हैं, लेकिन फिर नफ़्स के बहकावे में आ कर रोज़ा रखना छोड़ देते हैं। याद रखिये ! रमज़ानुल मुबारक के पूरे रोज़े रखना फ़र्ज़ है, बिला उ़ज़्रे शरई एक रोज़ा भी तर्क करना नाजाइज़ व ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है। बिला उ़ज़्रे शरई जान बूझ कर रोज़ा छोड़ने के बारे में चन्द वईदें सुनिये और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पनाह अगर माहे रमज़ान के रोज़े बिग़ैर किसी शरई उ़ज़्र के छोड़े हैं तो तौबा कर के उन रोज़ों की क़ज़ा कर लीजिये और आयिन्दा पाबन्दी से रमज़ान के रोज़े रखने की निय्यत भी कर लीजिये। चुनान्चे,

www.dawateislami.net

नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : "जिस ने किसी रुख़्सत और मरज़ के बिग़ैर रमज़ानुल मुबारक का एक रोज़ा छोड़ा, वोह सारी ज़िन्दगी के रोज़े रखे तब भी उस की कमी पूरी नहीं कर सकता।"

(جامع الترمذی، ابواب الصوم، باب ماجاء فی الافطار متعمداً، الحدیث: ۷۲۳، ص ۱۷۱۸)

सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इस्लाम में चार चीज़ें फ़र्ज़ फ़रमाई हैं, जिस ने उन में से तीन पर अ़मल किया तो वोह उसे किसी काम न आएंगी जब तक कि वोह उन तमाम को अदा न करे : (1) नमाज़ (2) ज़कात (3) रमज़ानुल मुबारक के रोज़े और (4) बैतुल्लाह शरीफ़ का ह़ज।

(المسند للامام احمد بن حنبل، الحدیث: ۱۷۸۰۴، ج ۶، ص ۲۳۶)

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से मरवी है, ताजदारे मदीनए मुनव्वरा, सुल्त़ाने मक्कए मुकर्रमा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बा क़रीना है : जिस ने माहे रमज़ान को पाया और इस के रोज़े न रखे वोह शख़्स शक़ी (या'नी बदबख़्त) है। जिस ने अपने वालिदैन या किसी एक को पाया और इन के साथ अच्छा सुलूक न किया वोह भी शक़ी (या'नी बदबख़्त) है और जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूद न पढ़ा, वोह भी शक़ी (या'नी बदबख़्त) है।" (مَجمعُ الزّوائد ج ۳ ص ۳۴۰ حدیث ۴۷۷۳)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अभी आप ने रोज़े छोड़ने से मुतअ़ल्लिक़ दिल हिला देने वाली अह़ादीसे मुबारका समाअ़त फ़रमाईं, क्या अब भी रोज़े तर्क करेंगे ? क्या अब भी नमाज़े क़ज़ा करेंगे ? क्या अब भी गुनाहों से बाज़ नहीं आएंगे ? आइये पक्की निय्यत कर लीजिये कि اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ अब मेरी कोई नमाज़ क़ज़ा नहीं होगी ! कोई रोज़ा क़ज़ा नहीं होगा ! ज़हे नसीब कि हम अपने साथ साथ अपने

www.dawateislami.net

बच्चों और घर वालों को भी नमाज़ और रोज़े का आ़दी बनाएं। अगर हम ख़ुद को और अपने घर वालों को नेक बनाना चाहते हैं और गुनाहों भरी ज़िन्दगी से जान छुड़ाना चाहते हैं तो ख़ुद को और घर वालों को दा'वते इस्लामी के पाकीज़ा मदनी माह़ोल से वाबस्ता कर लीजिये, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस की बरकत से नेक बनने का जज़्बा पैदा होगा और गुनाहों से नफ़रत का ज़ेह्न बनेगा और यूं हमारी दुन्या व आख़िरत दोनों संवर जाएंगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! पीरों के पीर, पीरे दस्तगीर, रौशन ज़मीर शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ मादरज़ाद (या'नी पैदाइशी) वली थे। आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अभी अपनी मां के पेट में थे और मां को जब छींक आती और इस पर वोह اَلْحَمْدُ لِلّٰہ कहतीं, तो आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ पेट ही में जवाबन یَرْحَمُكِ اللہُ कहते, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ यकुम रमज़ानुल मुबारक बरोज़ पीर सुब्हे सादिक़ के वक़्त दुन्या में जल्वा गर हुवे, उस वक़्त होंट आहिस्ता आहिस्ता ह़रकत कर रहे थे और **अल्लाह अल्लाह** की आवाज़ आ रही थी। (मुन्ने की लाश, स. 4 - 5)

रोनक़े कुल औलिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर
पेशवाए अस्फ़िया या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर
आप हैं पीरों के पीर और आप हैं रोशन ज़मीर
आप शाहे अतक़िया या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर
पैदा होते ही रखे रमज़ां में रोज़े, दिन में दूध
का न इक क़त़रा पिया या ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर

(वसाइले बख़्शिश, स. 547)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

खेल कूद से बे रग़बती

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा जाता है कि बचपन में उ़मूमन बच्चे खेल कूद की त़रफ़ राग़िब होते हैं और पढ़ाई से दूर भागते हैं जब कि हमारे ग़ौसे पाक رَحْمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِ की शान तो देखिये कि बचपन ही से आप को खेल कूद से कोई रग़बत नहीं थी, निहायत साफ़ सुथरे रहते और ज़बाने मुबारक से कभी कोई कम अ़क़्ली की बात न निकलती थी, अपने लड़कपन के मुतअ़ल्लिक़ ख़ुद इरशाद फ़रमाते हैं कि उ़म्र के इब्तिदाई दौर में जब कभी मैं लड़कों के साथ खेलना चाहता तो ग़ैब से आवाज़ आती थी कि "लह्व लइ़ब (खेल कूद) से बाज़ रहो" जिसे सुन कर मैं रुक जाया करता था और अपने गिर्दो पेश पर नज़र डालता तो मुझे कोई कहने वाला दिखाई न देता था, जिस से मुझे दहशत सी मा'लूम होती, मैं जल्दी से भागता हुवा घर आता और वालिदए मोह़्तरमा की आग़ोशे मह़ब्बत में छुप जाता था, अब वोही आवाज़ मैं अपनी तन्हाइयों में सुना करता हूं, अगर मुझे नींद आती है तो फ़ौरन मेरे कानों में आ कर मुझे मुतनब्बेह (ख़बरदार) कर देती है कि "तुम को इस लिये नहीं पैदा किया गया है कि तुम सोया करो।" (بہجۃالاسرار،ص۴۸)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमें भी चाहिये कि हम अपने बच्चों को दूसरी फ़ुज़ूल बातें सिखाने के बजाए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का ज़िक्र सिखाएं, اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ इस का बच्चों पर अच्छा असर पड़ेगा। चुनान्चे, मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الْحَنَّان अपनी किताब "इस्लामी ज़िन्दगी" जिसे اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना ने भी शाएअ़ किया है, इस किताब में बच्चों की परवरिश का इस्लामी त़रीक़ा बताते हुवे लिखते हैं :

जब बच्चा कुछ बोलने के लाइक़ हो तो उसे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम सिखाओ, पहले माएं **अल्लाह अल्लाह** कह कर बच्चों

को सुलाती थीं और अब घर के रेडियो और ग्रामोफ़ोन (ऐसा आला जिस के रीकार्ड से आवाज़ निकलती है) बजा कर बहलाती हैं। जब बच्चा समझदार हो जाए तो उस के सामने ऐसी ह़रकत न करो जिस से बच्चे के अख़्लाक़ ख़राब हों। क्यूंकि बच्चों में नक़्ल करने की ज़ियादा आ़दत होती है। इन के सामने नमाज़ें पढ़ो। क़ुरआने पाक की तिलावत करो और इन को बुज़ुर्गों के क़िस्से कहानियां सुनाओ। बच्चों को कहानियां सुनने का बहुत शौक़ होता है। सबक़ आमोज़ कहानियां सुन कर अच्छी आ़दतें पड़ेंगी। जब और ज़ियादा होश संभालें तो सब से पहले इन को पांचों कलिमे, ईमाने मुजमल, ईमाने मुफ़स्सल, फिर नमाज़ सिखाओ। किसी मुत्तक़ी या ह़ाफ़िज़ या मौलवी (साहिब) के पास कुछ रोज़ बिठा कर क़ुरआने पाक और उर्दू के दीनिय्यात (इस्लामिय्यात) के रिसाले ज़रूर पढ़ाओ और जिस से बच्चा मा'लूम करे कि मैं किस दरख़्त की शाख़ और किस शाख़ का फल हूं, और पाकी पलीदी वग़ैरा के अह़काम याद करे।

(इस्लामी ज़िन्दगी, स. 30 मत़बूआ़ मक्तबतुल मदीना)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बच्चों की मदनी तर्बिय्यत के लिये बच्चों की सच्ची कहानियां लिखी हैं, जिस में बहुत ही प्यारे प्यारे उ़नवान हैं, अन्दाज़ भी बहुत आसान रखा है ताकि बच्चे ब आसानी समझ सकें और इन रिसालों में पेपर बहुत चिकना रखा गया है और जगह जगह ख़ाके बनाए गए हैं ताकि बच्चों के लिये कशिश हो, बच्चों की येह कहानियां मक्तबतुल मदीना से हदिय्यतन त़लब कीजिये और अगर वेब साइट से पढ़ना चाहें तो दा'वते इस्लामी की वेब साइट www.dawateislami.net से आप इन कहानियों को पढ़ भी सकते हैं, डाऊन लोड़ भी कर सकते हैं और इस का प्रिन्ट भी निकाल सकते हैं। उन रसाइल के नाम हैं :

www.dawateislami.net

(1) नूर वाला चेहरा (2) फ़िरऔ़न का ख़्वाब
(3) बेटा हो तो ऐसा (4) झूटा चोर

''नूर वाला चेहरा'' आप पढ़ेंगे या बच्चों को पढ़ाएंगे या सुनाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ दिल में प्यारे नबी, रसूले हाशिमी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत बढ़ेगी और साथ ही साथ वीडियो गेम्ज़ के दीनी और दुन्यावी नुक़्सानात से भी आगाही होगी।

''फ़िरऔ़न का ख़्वाब'' आप पढ़ेंगे या बच्चों को पढ़ाएंगे या सुनाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा कलीमुल्लाह عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام की शानो अ़ज़मत से आगाही होगी और साथ ही साथ कोल्ड ड्रिंक्स (Cold Drinks) के नुक़्सानात की भी मा'लूमात होंगी।

''बैटा हो तो ऐसा'' आप पढ़ेंगे या बच्चों को पढ़ाएंगे या सुनाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ पता चलेगा कि ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल عَلَیْہِ السَّلَام ने किस त़रह़ अपने आप को क़ुरबानी के लिये पेश किया और फिर किस त़रह़ जन्नती मेंढा, आप के लिये **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने भेजा, ह़ज़रते इब्राहीम عَلَیْہِ السَّلَام के ख़ुसूसी फ़ज़ाइल भी पता चलेंगे और टॉफ़ियां, चॉक्लेट्स और रंग बिरंगी खट-मिठ्ठी गोलियां खाने के नुक़्सानात भी आप को मा'लूम होंगे।

''झूटा चोर'' रिसाला अगर आप पढ़ेंगे या बच्चों को पढ़ाएंगे या सुनाएंगे तो اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप को भी झूट से नफ़रत होगी और बच्चों को भी। और اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ सच बोलने की रग़बत आप को भी होगी और आप के बच्चों को भी और जो कार आमद मदनी फूल इस रिसाले के आख़िर में हैं, इस से आप को भी और बच्चों को भी ज़ाहिरो बात़िन साफ़ रखने की तर्बिय्यत होगी। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

काश ! जिन्न भूत की कहानियां बच्चों को पढ़ाने या सुनाने के बजाए हम येह सच्ची इस्लामी कहानियां बच्चों को पढ़ाएं या सुनाएं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ आप देखेंगे कि आप के बच्चे मदनी माह़ोल में ढलते चले जाएंगे।

www.dawateislami.net

मेरे ग़ौस का वसीला रहे शाद सब क़बीला
इन्हें ख़ुल्द में बसाना मदनी मदीने वाले
मेरे जिस क़दर हैं अह़बाब उन्हें कर दें शाह बे ताब
मिले इ़श्क़ का ख़ज़ाना मदनी मदीने वाले
मेरी आने वाली नस्लें तेरे इ़श्क़ ही में मचलें
उन्हें नेक तू बनाना मदनी मदीने वाले

(वसाइले बख़्शिश, स. 429)

शिक्मे मादर में इ़ल्म

पांच बरस की उ़म्र में जब पहली बार بِسْمِ اللّٰہ पढ़ने की रस्म के लिये किसी बुज़ुर्ग के पास बैठे तो और بِسْمِ اللّٰہ पढ़ कर सूरए फ़ातिह़ा और الٓمّٓ से ले कर **18** पारे पढ़ कर सुना दिये। उन बुज़ुर्ग ने कहा : बेटे ! और पढ़िये। फ़रमाया : बस मुझे इतना ही याद है क्यूंकि मेरी मां को भी इतना ही याद था, जब मैं अपनी मां के पेट में था उस वक़्त वोह पढ़ा करती थीं, मैं ने सुन कर याद कर लिया था।

(रिसाला : मुन्ने की लाश, स. 4 बह़वाला : الحقائق فی الحدائق ص140)

मेरे मुर्शिद मेरी सरकार हैं ग़ौसे आ'ज़म
मेरे रहबर मेरे ग़म ख़्वार हैं ग़ौसे आ'ज़म
हो करम ! हुस्ने अ़मल आह ! नहीं है कोई
न वज़ाइफ़ हैं न अज़्कार हैं ग़ौसे आ'ज़म
ह़श्र के रोज़ हमारी भी शफ़ाअ़त करना
आह ! हम सख़्त गुनहगार हैं ग़ौसे आ'ज़म

(वसाइले बख़्शिश)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने देखा कि ग़ौसुल वरा, मुश्किल कुशा व ह़ाजत रवा, ग्यारहवीं वाले पिया رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ जब कुछ बड़े हो गए तो आप को कुरआने पाक की ता'लीम दिलवाने के लिये मद्रसे में दाख़िल करवा दिया गया। हमें भी चाहिये कि हम

www.dawateislami.net

अपने बच्चों को कुरआने पाक की ता'लीम ज़रूर दिलवाया करें। अफ़्सोस ! आज हम अपने बच्चों को दुन्या की ता'लीम तो बहुत ज़ोरो शोर से दिलवाते हैं, ख़ूब पैसे ख़र्च करते हैं, तवज्जोह भी देते हैं मगर दीनी ता'लीम की त़रफ़ हमारा कोई रुजह़ान नहीं है। हम स्कूल के होमवर्क के मुतअ़ल्लिक़ तो रोज़ बच्चों से पूछ गछ करते होंगे, अपनी निगरानी में बच्चों से होमवर्क करवाते होंगे, अगर स्कूल में बच्चों की पढ़ाई में कमज़ोरी नज़र आए तो बच्चो को डांटते भी होंगे और इस कमज़ोरी को दूर करने और ता'लीमी मे'यार को बेहतर से बेहतर बनाने के लिये ट्यूशन की अलग से तरकीब भी करते होंगे कि किसी त़रह़ मेरा बच्चा कोई पोज़ीशन लेने में कामयाब हो जाए, लेकिन सद अफ़्सोस ! कि दीनी ता'लीमात और मद्रसे के अस्बाक़ से मुतअ़ल्लिक़ हम बच्चों पर बिल्कुल तवज्जोह नहीं देते। आइये ! आज से निय्यत करते हैं कि अब हम अपने बच्चों को ज़ौक़ो शौक़ के साथ दीनी ता'लीम भी दिलवाएंगे और इस ह़वाले से उन पर ख़ूब तवज्जोह भी देंगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के तह़्त चलने वाले "मद्रसतुल मदीना" एक अ़र्से से ता'लीमे कुरआन को आ़म करने में मसरूफ़े अ़मल हैं, जहां आप ब आसानी अपने बच्चों को कुरआनी ता'लीमात के ज़ेवर से आरास्ता करने के साथ साथ उन के अख़्लाक़ व किरदार को भी बेहतर बना सकते हैं। लिहाज़ा इस से फ़ाइदा उठाइये और हो सके तो कम अज़ कम अपने एक बच्चे को कुरआने पाक का ह़ाफ़िज़ बनाइये, आ़लिमे दीन बनाइये, اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी त़हरीक दा'वते इस्लामी, जिस का मदनी पैग़ाम दुन्या के कमो बेश **192** मुमालिक में पहुंच चुका है, इस मदनी तह़रीक के तह़्त मदनी मुन्नों और मदनी मुन्नियों को فی سبیل اللہ कुरआने पाक ह़िफ़्ज़ भी करवाया जाता है, नाज़िरा भी पढ़ाया जाता है, सिर्फ़ पाकिस्तान में **2** हज़ार से ज़ाइद मद्रसतुल मदीना क़ाइम हैं, जिन में **1** लाख से ज़ाइद त़लबा व त़ालिबात हैं,

www.dawateislami.net

दा'वते इस्लामी के मदनी माहोल में बच्चों और बच्चियों को आ़लिम और आ़लिमा कोर्स (दर्से निज़ामी) भी करवाया जाता है, सिर्फ़ पाकिस्तान में दा'वते इस्लामी के तक़रीबन पोने 4 सो जामिअ़ातुल मदीना क़ाइम हैं, जिन में हज़ारों त़लबा व त़ालिबात हैं। जो वालिदैन अपने बच्चों को ह़ाफ़िज़े क़ुरआन बनाते हैं, उन को बरोज़े क़ियामत बहुत बड़ा मक़ाम अ़त़ा किया जाएगा।

ह़ज़रते सय्यिदुना बुरैदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत है कि सरकारे वाला तबार, हम बे कसों के मददगार, शफ़ीए़ रोज़े शुमार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, ह़बीबे परवर दगार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इरशाद फ़रमाया : जिस ने क़ुरआन पढ़ा और इसे सीखा और इस पर अ़मल किया तो उस के वालिदैन को क़ियामत के दिन नूर का एक ऐसा ताज पहनाया जाएगा, जिस की चमक सूरज की त़रह़ होगी और उस के वालिदैन को दो ह़ुल्ले पहनाए जाएंगे जिन की क़ीमत येह दुन्या अदा नहीं कर सकती तो वोह पूछेंगे : "हमें येह लिबास क्यूं पहनाए गए हैं ?" उन से कहा जाएगा : "तुम्हारे बच्चों के क़ुरआन को थामने के सबब।"

(المستدرک، کتاب فضائل القرآن، باب من قرا القرآن وتعلمه...الخ، رقم ۲۱۳۲، ج۲، ص۲۷۸)

बच्चों को क़ुरआने पाक ह़िफ़्ज़ करवाने या नाज़िरा पढ़वाने के साथ साथ इ़ल्मे दीन भी सिखाएं, अ़क़ाइद के बारे में भी बताएं, प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा, ह़बीबे किब्रिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की आल व अस्ह़ाब عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان और औलिया व उ़लमा की मह़ब्बत और अ़ज़मत भी बच्चे के दिल में उजागर करें, अपने बच्चों को त़हारत, ग़ुस्ल, वुज़ू, नमाज़ व रोज़ा वग़ैरा के बारे में भी ता'लीम दें, इस के लिये आप को मश्वरा देता हूं कि अपने बच्चों को जामिअ़तुल मदीना में दाख़िल कराएं, اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ येह तमाम उ़लूम बल्कि इस से भी कहीं ज़ियादा, आप का बच्चा इ़ल्मे दीन ह़ासिल कर के दुन्या व आख़िरत में आप के लिये राह़त व सुकून का बाइ़स बनेगा। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب !   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

अपनी विलायत का इल्म होना

हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم फ़रमाते हैं कि जब मैं सिग़र सिनी (बचपन) के आ़लम में मद्रसे को जाया करता था तो रोज़ाना एक फ़िरिश्ता इन्सानी शक्ल में मेरे पास आता और मुझे मद्रसे ले जाता, ख़ुद भी मेरे पास बैठा रहता था, मैं उस को मुत़लक़न नहीं पहचानता था कि येह फ़िरिश्ता है, एक दिन मैं ने उस से पूछा : आप कौन हैं ? तो उस ने जवाब दिया कि मैं फ़िरिश्तों में से एक फ़िरिश्ता हूं, **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे इस लिये भेजा है कि मैं मद्रसे में आप के साथ रहा करूं।

इसी त़रह़ आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं, कि एक रोज़ मेरे क़रीब से एक शख़्स गुज़रा जिस को मैं बिल्कुल न जानता था, उस ने जब फ़िरिश्तों को येह कहते सुना कि कुशादा हो जाओ ताकि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का वली बैठ जाए, तो उस ने एक फ़िरिश्ते से पूछा कि येह लड़का किस का है ? तो फ़िरिश्ते ने जवाब दिया कि येह सादात के घराने का लड़का है, तो उस ने कहा कि येह अ़न क़रीब बहुत बड़ी शान वाला होगा। (بہجۃ الاسرار، ص۴۸)

आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के साह़िब ज़ादे शैख़ अ़ब्दुर्रज़्ज़ाक़ رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ का बयान है कि एक दफ़्आ़ हुज़ूर ग़ौसे आ'ज़म عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْاَکْرَم से दरयाफ़्त किया गया कि आप को अपने वली होने का इल्म कब हुवा ? तो आप ने फ़रमाया कि जब मैं दस बरस का था और अपने शहर के मक्तब में जाया करता था और फ़िरिश्तों को अपने पीछे और इर्द गिर्द चलते देखता, जब मक्तब में पहुंच जाता तो वोह बार बार येह कहते कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के वली को बैठने के लिये जगह दो। इसी वाक़िए़ को बार बार देख कर मेरे दिल में येह एह़सास पैदा हुवा कि **अल्लाह** तआ़ला ने मुझे दरजए विलायत पर फ़ाइज़ किया है। (بہجۃ الاسرار، ص۴۸)

फ़िरिश्ते मद्रसे तक साथ पहुंचाने को जाते थे
येह दरबारे इलाही में है रुत्बा ग़ौसे आ'ज़म का

www.dawateislami.net

ख़ुदा के फ़ज़्ल से हम पर है साया ग़ौसे आ'ज़म का
हमें दोनों जहां में है सहारा ग़ौसे आ'ज़म का
लहद में जब फ़िरिश्ते मुझ से पूछेंगे तो कह दूंगा
त़रीक़ा क़ादिरी हूं नाम लेवा ग़ौसे आ'ज़म का
जमीले क़ादिरी सो जान से हो क़ुरबान मुर्शिद पर
बनाया जिस ने तुझ जैसे को बन्दा ग़ौसे आ'ज़म का

बचपन में राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए

दस्तगीरे बे कसां, राहनुमाए गुमराहां, शहबाज़े ला मकां رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه बचपन ही में इल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये राहे ख़ुदा के मुसाफ़िर बन गए थे। चुनान्चे, ह़ज़रते शैख़ मुह़म्मद बिन क़ाइद अवानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِ फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते मह़बूबे सुब्ह़ानी, ग़ौसे आ'ज़म जीलानी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने हम से फ़रमाया कि बचपन में ह़ज के दिन मुझे एक मरतबा जंगल की त़रफ़ जाने का इत्तिफ़ाक़ हुवा और मैं एक बैल के पीछे पीछे चल रहा था कि उस बैल ने मेरी त़रफ़ देख कर कहा : يَاعَبْدَالْقَادِرِمَا لِهٰذَا خُلِقْتَ या'नी ऐ अ़ब्दुल क़ादिर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه तुम्हें इस क़िस्म के कामों के लिये तो पैदा नहीं किया गया !" मैं घबरा कर घर लौटा और अपने घर की छत पर चढ़ गया तो क्या देखता हूं कि मैदाने अ़रफ़ात में लोग खड़े हैं, इस के बा'द मैं ने अपनी वालिदए माजिदा की ख़िदमते अक़्दस में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ किया : "आप मुझे राहे ख़ुदा में वक़्फ़ फ़रमा दें और मुझे बग़दाद जाने की इजाज़त मर्ह़मत फ़रमाएं ताकि मैं वहां जा कर इल्मे दीन ह़ासिल करूं।" वालिदए माजिदा رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهَا ने मुझ से इस का सबब दरयाफ़्त किया, मैं ने बैल वाला वाक़िआ़ अ़र्ज़ कर दिया तो उन की आंखों में आंसू आ गए और वोह **80** दीनार जो मेरे वालिदे माजिद की विरासत थे, मेरे पास ले आईं, तो मैं ने उन में से **40** दीनार ले लिये और **40** दीनार अपने भाई सय्यिद अबू अह़मद رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه

www.dawateislami.net

के लिये छोड़ दिये, वालिदए माजिदा ने मेरे चालीस (**40**) दीनार मेरी गुदड़ी में सी दिये और मुझे बग़दाद जाने की इजाज़त इनायत फ़रमा दी । उन्हों ने मुझे हर हाल में रास्तगोई और सच्चाई को अपनाने की ताकीद फ़रमाई और जीलान के बाहर तक मुझे अल वदाअ़ कहने के लिये तशरीफ़ लाईं और फ़रमाया : "ऐ मेरे प्यारे बेटे ! मैं तुझे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा और खुशनूदी की ख़ातिर अपने पास से जुदा करती हूं और अब मुझे तुम्हारा मुंह क़ियामत को ही देखना नसीब होगा ।" (بہجۃ الاسرار، ذکر طریقہ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ، ص ۱۶۷)

शौक़े इल्मे दीन

हज़रते सय्यिदुना शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللہِ الْغَنِی के इल्मे दीन हासिल करने का अन्दाज़ बड़ा निराला था, आप के शौक़े इल्मे दीन का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आप फ़रमाते हैं : मैं अपने तालिबे इल्मी के ज़माने में असातिज़ा से सबक़ ले कर जंगल की तरफ़ निकल जाया करता था, फिर बयाबानों और ख़राबों (वीरानों) में दिन हो या रात, आंधी हो या मूसलाधार बारिश, गर्मी हो या सर्दी अपना मुतालआ़ जारी रखता था, उस वक़्त मैं अपने सर पर एक छोटा सा इमामा बांधता और मा'मूली तरकारियां खा कर शिकम (पेट) की आग सर्द करता, कभी कभी येह तरकारियां भी हाथ न आतीं, क्यूंकि भूक के मारे हुवे दूसरे फ़ुक़रा भी इधर का रुख़ कर लिया करते थे, ऐसे मवाक़ेअ़ पर मुझे शर्म आती थी कि मैं दरवेशों की हक़ तलफ़ी करूं, मजबूरन वहां से चला जाता और अपना मुतालआ़ जारी रखता, फिर नींद आती तो ख़ाली पेट ही कंकरियों से भरी हुई ज़मीन पर सो जाता । (قلائد الجواھر، ص ۱۰ ملخصاً)

आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ अपने इसी ज़मानए तालिबे इल्मी के बारे में फ़रमाते हैं : मैं ज़माने की जिन सख़्तियों से दो चार हुवा, उन्हें बरदाश्त करते करते पहाड़ भी फट जाता, येह तो उस ज़ाते बे नियाज़ (عَزَّوَجَلَّ) का काम है कि मैं ब आ़फ़िय्यत उन ख़ारज़ारों (कांटेदार जंगलों) से गुज़र गया । (قلائد الجواھر، ص ۱۰)

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ने मुलाहज़ा फ़रमाया कि हमारे ग़ौसे आ'ज़म दस्तगीर عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْکَبِیْر को इल्मे दीन हासिल करने का किस क़दर शौक़ था कि तक्लीफ़ें और मशक़्क़तें बरदाश्त कर के भी इल्मे दीन हासिल फ़रमाते। यक़ीनन इल्मे दीन का हुसूल बहुत बड़ी सआदत है। इल्म के हुसूल की कोशिश करने वाले के लिये अहादीसे मुबारका में कसीर फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं। चुनान्चे,

हज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो अपने दीन का इल्म सीखने के लिये सुब्ह को चला या शाम को वोह जन्नती है।

(کنز العمال، کتاب العلم، باب اول فی الترغیب فیہ، الحدیث ۲۸۷۰۲، ج۱۰، ص۶۱)

हज़रते सय्यिदुना अबू दर्दा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को फ़रमाते हुवे सुना : जो इल्म की तलाश में किसी रास्ते पर चलता है तो **अल्लाह** तआला उस के लिये जन्नत का रास्ता आसान फ़रमा देता है और बेशक फ़िरिश्ते तालिबुल इल्म के अमल से ख़ुश हो कर उस के लिये अपने पर बिछा देते हैं और बेशक ज़मीनो आस्मान में रहने वाले यहां तक कि पानी में मछलियां, आलिमे दीन के लिये इस्तिग़फ़ार करती हैं और आलिम की आबिद पर फ़ज़ीलत ऐसी है जैसी चौदहवीं रात के चांद की दीगर सितारों पर और बेशक उलमा वारिसे अम्बिया हैं, बेशक अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام दिरहम व दीनार का वारिस नहीं बनाते बल्कि येह नुफ़ूसे क़ुदसिय्या عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام तो सिर्फ़ इल्म का वारिस बनाते हैं, तो जिस ने इसे हासिल कर लिया, उस ने बड़ा हिस्सा पा लिया।

(سنن ابن ماجہ، کتاب السنۃ، ج۱، ص۱۴۵، رقم الحدیث: ۲۲۳، مطبوعہ دار المعرفۃ بیروت)

अमीरुल मोअमिनीन हज़रते सय्यिदुना अ़ली صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से रिवायत है कि रसूलुल्लाह كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم ने फ़रमाया : जो बन्दा इल्म की जुस्तजू में जूते या मोज़े या कपड़े

www.dawateislami.net

पहनता है, अपने घर की चौखट से निकलते ही उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाते हैं। (طبرانی اوسط، باب المیم، ج۴ص۲۰۴، رقم:۵۷۲۲، مطبوعہ دار الفکر بیروت)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! दौरे जदीद में नौजवान नस्ल ऐसे लोगों की तलाश में सरगर्दां नज़र आती है जिन्हें वोह दुन्या में कामयाबी के लिये अपना आईडियल बना सके। मगर सद अफ़्सोस! इस्लामी ता'लीमात से दूरी की बिना पर वोह येह बात भूल चुकी है कि दुन्यावी ज़िन्दगी फ़ानी है। लिहाज़ा उख़रवी ज़िन्दगी में नजात पाने और बारगाहे ख़ुदावन्दी में सुर्ख़रू होने के लिये बेहद ज़रूरी है कि हम इसी दुन्या में ऐसे लोग तलाश करें जो सीरत व किरदार के आ'ला नुमूने हों और हम उन्हें आईडियल बना कर फ़ख़्र महसूस करें। क्यूंकि कोई इन्सान उस वक़्त तक अपनी सीरत को सहीह़ इस्लामी ख़ुतूत पर ता'मीर नहीं कर सकता जब तक कि उस के सामने सीरत व किरदार के आ'ला नुमूने मौजूद न हों।

इस में कोई शक नहीं कि अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से बढ़ कर कोई दूसरा इन्सान आईडियल नहीं बन सकता क्यूंकि उन का अस्ल काम ही ता'मीरे सीरत था। फ़रमाने इलाही हर मोमिन व मुत्तक़ी के लिये न सिर्फ़ मश्अ़ले राह बल्कि मक़्सदे ह़यात है जैसा कि पारह 21 सूरतुल अह़ज़ाब की आयत नम्बर 21 में इरशादे बारी तआ़ला है ﴿لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक तुम्हें रसूलुल्लाह की पैरवी बेहतर है। (پ۲۱، الاحزاب:۲۱)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! येह बात भी सब जानते हैं कि शहनशाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का त़रीक़े तर्बिय्यत, निज़ामे सोह़बत था, जिस किसी ने सोह़बते नबवी से जिस क़दर ज़ियादा फ़ैज़ ह़ासिल किया, उसी क़दर कामिल व अकमल ठहरा और बारगाहे ख़ुदावन्दी में मक़्बूल व मुअ़ज़्ज़ज़ बन गया।

www.dawateislami.net

ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द उम्मत की तर्बिय्यत का येही फ़रीज़ा बारगाहे नबुव्वत के बराहे रास्त तर्बिय्यत याफ़्ता होने का शरफ़ रखने वाले सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने संभाल लिया। नेकी की दा'वत व तर्बिय्यत का येह सिलसिला चूंकि दाइमी व अबदी था और इसे क़ियामत तक जारी रहना था इस लिये येह किसी न किसी शक्लो सूरत में जारी व सारी रहा।

सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के बा'द भी हर दौर में ऐसे उ़लमाए ह़क़ और साह़िबे दिल बुज़ुर्ग सामने आते रहे जिन्हों ने इस्लामी ता'लीमात के नूर से न सिर्फ़ लोगों को मुनव्वर किया बल्कि अपने अ़मल से दीने ह़क़ की सह़ीह़ तफ़्सीर व तशरीह़ भी की। इस्लामी तारीख़ का कोई दौर भी ऐसे नुफ़ूसे क़ुदसिय्या से ख़ाली नहीं। सल्त़नतें मिट गईं, हुकूमतें वुजूद में आती और ख़त्म होती रहीं, शहर बसते और तबाही का शिकार होते रहे, मगर इन औलियाउल्लाह ने नेकी की दा'वत के इस अहम फ़रीज़े को कभी तर्क न किया। इन नेक बन्दों ने जब अह़कामे ख़ुदावन्दी को अपने नुफ़ूस की सल्त़नत पर नाफ़िज़ किया तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आ़म लोगों के दिलों पर उन की हुकूमत क़ाइम फ़रमा दी, नीज़ इन्हें अपना दोस्त क़रार देते हुवे : ﴿وَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ﴾ **तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और न उन्हें कुछ अन्देशा हो और न कुछ ग़म। (پ۱، البقرۃ:۶۲) का मुज़्दए जांफ़िज़ा सुनाया। इन्ही लोगों में से एक ह़ज़रते सय्यिदुना ग़ौसे आ'ज़म जीलानी, क़ुत्बे रब्बानी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْغَنِي भी हैं, जिन की अ़ज़्मत का आज भी डंका बज रहा है, दीने इस्लाम की शम्अ़ को फ़रोज़ां करने में आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमाते जलीला, एक तारीख़ी ह़क़ीक़त है, आप ने लालच व ख़ौफ़ से बे नियाज़ हो कर मह्ज़ रिज़ाए इलाही के लिये अपनी ज़िन्दगी का लम्ह़ा लम्ह़ा लोगों की इस्लाह़ के लिये न सिर्फ़ वक़्फ़ किया बल्कि हर दम मख़्लूक़े ख़ुदा की दुन्या व

www.dawateislami.net

आख़िरत संवारने में मसरूफ़ भी रहे। हमें भी चाहिये कि इन के नक़्शे क़दम पर चलें और इन की सीरत से हासिल होने वाले मदनी फूलों पर अमल करते हुवे अपनी दुन्या व आख़िरत को बेहतर बनाएं। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें भी हुज़ूरे ग़ौसे आ'ज़म رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه के नक़्शे क़दम पर चलने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए। जो ख़ुश नसीब आ़शिक़ाने ग़ौसो रज़ा सुन्नत की ख़िदमत के लिये वक़्फ़े मदीना हों, नेकी की दा'वत दें, हर माह मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र करें, मदनी इन्आ़मात अपनाएं, उन के लिये आ़शिक़े ग़ौसो रज़ा अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه बारगाहे ग़ौसिय्यत में इल्तिजा करते हैं

सजाएं इ़मामा बढ़ाएं जो दाढ़ी
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो हैं वक़्फ़, सुन्नत की ख़िदमत की ख़ातिर
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो रोज़ाना देते हैं नेकी की दा'वत
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
सफ़र क़ाफ़िले में जो करते हैं हर माह
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो दें राहे मौला में बारह महीने
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म
जो अपनाते हैं "मदनी इन्आ़म" अकसर
उन्हें ह़श्र में बख़्शवा ग़ौसे आ'ज़म

اٰمین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

बयान का ख़ुलासा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो! ग्यारहवीं वाले पीर, पीराने पीर, पीरे दस्तगीर, रौशन ज़मीर رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه की भी क्या बुलन्द व बाला शान है कि आप, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से मुर्दों को ज़िन्दा कर दिया

www.dawateislami.net

करते थे, **अल्लाह अल्लाह**!!! आप की शान तो देखिये कि आप की विलादत से क़ब्ल, आप की विलायत की खुश ख़बरियां आप के वालिद को अम्बिया बल्कि खुद सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم देते हैं, शाने ग़ौस पर कुरबान जाइये, आप की आमद की ख़बरें, आप की तशरीफ़ आवरी से क़ब्ल औलिया देते आए, शानो अ़ज़्मत तो मुलाहज़ा फ़रमाइये कि पैदा होते ही रमज़ान में दिन के वक़्त दूध नौश नहीं फ़रमाते, سُبْحٰنَ اللہ बचपन ही से खेल कूद से बचते हैं, मरह़बा ! आप ने अपनी अम्मी जान के शिकम में **18** पारे हिफ़्ज़ कर लिये थे, **अल्लाह** अक्बर ! क्या अरफ़अ़ व आ'ला शान है कि फ़िरिश्ते मद्रसे तक आप को पहुंचाने आते थे, शौक़े इल्म तो देखिये, मरह़बा सद मरह़बा ! आप दिन रात, गर्मी सर्दी, आंधी तूफ़ान बहर ह़ाल मुत़ालआ़ जारी रखते थे, मशक़्क़तें तक्लीफ़ें बरदाश्त करते मगर हुसूले इल्म में मश्ग़ूल रहते, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हमें ग़ौसे पाक رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की मह़ब्बत नसीब फ़रमाए, हम आप की ग़ुलामी में ज़िन्दा रहें और काश ! बरोज़े क़ियामत भी आप के ग़ुलामों में उठें। **आमीन**

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी, ग़ौसे पाक की ग़ुलामी की त़रफ़ बुला रही है, दुन्या व आख़िरत की बेहतरियां पाने के लिये इस बग़दादी व मदनी माह़ोल से वाबस्ता हो जाइये।

मजलिसे मज़ाराते औलिया का तआ़रुफ़ :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमेशा तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के हर हर इस्लामी भाई व इस्लामी बहन को औलियाए किराम رَحِمَہُمُ اللہُ السَّلَام की ता'ज़ीम व तकरीम का दर्स दिया। आप के इसी दर्स का नतीजा है कि दा'वते इस्लामी के शो'बाजात में से एक अहम शो'बा **"मजलिसे मज़ाराते औलिया"** भी है। येह मजलिस दीगर मदनी कामों के साथ साथ बुज़ुर्गाने दीन के मज़ाराते

मुबारका पर हाज़िर हो कर मुख़्तलिफ़ दीनी ख़िदमात सर अन्जाम देती है। मसलन ह़त्तल मक़्दूर साहिबे मज़ार के उ़र्स के मौक़अ़ पर इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त का इनइ़क़ाद करती है, मज़ारात से मुलह़िक़ा मसाजिद में आ़शिक़ाने रसूल के मदनी क़ाफ़िले सफ़र करवाती और बिल ख़ुसूस उ़र्स के दिनों में मज़ार शरीफ़ के इह़ाते में सुन्नतों भरे मदनी ह़ल्क़े लगाती है, जिन में वुज़ू, ग़ुस्ल, तयम्मुम, नमाज़ और ईसाले सवाब का त़रीक़ा, मज़ारात पर ह़ाज़िरी के आदाब और सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतें सिखाई जाती हैं नीज़ दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त में शिर्कत, मदनी क़ाफ़िलों में सफ़र और मदनी इन्आ़मात पर अ़मल की तरग़ीब भी दिलाई जाती है, अय्यामे उ़र्स में साहिबे मज़ार की ख़िदमत में ढेरों ढेर ईसाले सवाब के तह़ाइफ़ पेश करती है नीज़ साहिबे मज़ार बुज़ुर्ग के सज्जादा नशीन, ख़ुलफ़ा और मज़ारात के मुतवल्ली साहिबान से वक़्तन फ़ वक़्तन मुलाक़ात कर के उन्हें दा'वते इस्लामी की ख़िदमात, जामिआ़तुल मदीना व मदारिसुल मदीना और बैरूने मुल्क में होने वाले मदनी कामों से आगाह करती है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी को दिन दुगनी रात चुगनी तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए। اٰمِین بِجَاہِ النَّبِیِّ الْاَمِین صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मदनी कामों में ह़िस्सा लीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने हमें एक मदनी मक़्सद अ़त़ा फ़रमाया है कि मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ लिहाज़ा अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल से वाबस्ता रहिये और ज़ैली ह़ल्क़े के **12** मदनी कामों में ख़ूब बढ़ चढ़ कर ह़िस्सा लेने वाले बन जाइये। ज़ैली ह़ल्क़े के **12** मदनी कामों में से एक काम रोज़ाना **"चौक दर्स"** भी है। बेशक चौक दर्स

www.dawateislami.net

तब्लीग़े दीन का एक बेहतरीन ज़रीआ़ है और येह बहुत बा बरकत और फ़ज़ीलत वाला काम है जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि बाज़ार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने वाले के लिये हर बाल के बदले क़ियामत में नूर होगा। (شُعَبُ الْاِیمان، ج۱، ص۴۱۲، حدیث۵۶۷)

याद रहे ! तिलावते क़ुरआन, ह़म्दो सना, मुनाजात व दुआ़ दुरूदो सलाम, ना'त, ख़ुत़बा, दर्स, सुन्नतों भरा बयान वग़ैरा सब "**ज़िक्रुल्लाह**" में शामिल हैं। लिहाज़ा हर इस्लामी भाई को चाहिये कि रोज़ाना कम अज़ कम **12** मिनट बाज़ार में फ़ैज़ाने सुन्नत का दर्स दे या सुने। जितनी देर तक दर्स देगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ उतनी देर उसे बाज़ार में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करने का सवाब मिलेगा।

سُبْحٰنَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ कितने ख़ुश नसीब हैं वोह इस्लामी भाई जो अपनी ज़बान को नेकी की दा'वत, सुन्नतों भरे बयान और ज़िक्रो दुरूद में लगाए रखते हैं। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ **चौक दर्स** में भी इल्मे दीन ही की बातें सिखाई जाती हैं। आप भी रोज़ाना **चौक दर्स** देने या सुनने की निय्यत कर लीजिये। इस से आप को ख़ूब ख़ूब दीनी मा'लूमात ह़ासिल होंगी और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ सवाब भी मिलेगा। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल की बरकत से बहुत से इस्लामी भाई गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ कर सुन्नतों के मुत़ाबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन रहे हैं। आइये एक मदनी बहार आप के गोश गुज़ार करता हूं। चुनान्चे,

दुश्मने सह़ाबा, मुह़िब्बे सह़ाबा बन गया

सूबा पंजाब (पाकिस्तान) के रिहाइशी इस्लामी भाई अपनी ज़िन्दगी में आने वाले इन्क़िलाब का तज़किरा कुछ यूं करते हैं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का करोड़हा करोड़ एह़सान कि उस ने मुझे मुसलमान घराने में पैदा किया मगर अफ़्सोस ! बद क़िस्मती मेरे आड़े आई और अ़क़्ल व ख़िरद की दहलीज़ पर क़दम रखने से पहले ही मुझे बुरे दोस्तों की सोह़बत मुयस्सर आ गई और येही नहीं बल्कि मेरे वोह

www.dawateislami.net

दोस्त बुराइयों में मुब्तला होने के साथ साथ बद अ़क़ीदा भी थे, येही वजह थी कि उन्हों ने मेरे ज़ेह्न में बद अ़क़ीदगी का ज़ह्र घोल दिया, बे मुरव्वती की इन्तिहा येह थी कि مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ हम सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मुतअ़ल्लिक़ गुस्ताख़ाना जुम्ले बकने और उन की शान में ज़बाने त़ा'न दराज़ करने में ज़रा नहीं लजाते थे, एक मरतबा ब सिलसिलए रोज़गार मेरा पंजाब से बाबुल मदीना (कराची) आना हुवा तो उन्हीं दिनों ख़ुश क़िस्मती से मेरा गुज़र एक ऐसे रास्ते से हुवा जहां मेन चौक पर सफ़ेद लिबास में मलबूस सरों पर सब्ज़ सब्ज़ इ़मामे सजाए कुछ इस्लामी भाई मौजूद थे तजस्सुस के हाथों मजबूर हो कर मैं उन के क़रीब गया तो देखा कि उन में से एक इस्लामी भाई "**फ़ैज़ाने सुन्नत**" नामी किताब थामे दर्स दे रहे हैं और बक़िय्या तवज्जोह के साथ दर्स सुनने में मसरूफ़ हैं, दरीं असना एक इस्लामी भाई ने आगे बढ़ कर मुझ से मुसाफ़ह़ा किया और मह़ब्बत के साथ मुझ से दर्स में शिर्कत की दरख़्वास्त की, लिहाज़ा मैं भी दर्स सुनने खड़ा हो गया। इ़श्क़े मुस्त़फ़ा और अ़ज़मते सह़ाबा से भरपूर अल्फ़ाज़ मेरे कानों में रस घोलने लगे, मेरे दिलो दिमाग़ को ताज़गी मिली और मुझे एह़सास होने लगा कि मैं आज तक गुमराही की ज़िन्दगी बसर करता रहा हूं, इस ख़याल के आते ही मेरी आंखों की वादियों से आंसूओं के चश्मे बहने लगे, ख़ौफ़े ख़ुदा की बदौलत मैं ने अपने तमाम साबिक़ा गुनाहों से तौबा कर ली। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की रह़मत पे क़ुरबान कि जिस ने मुझे चौक दर्स की बरकत से दुश्मनाने सह़ाबा की सफ़ से निकाल कर मुह़िब्बाने सह़ाबा की सफ़ में शामिल फ़रमा दिया। मेरा दिल मज़हबे अहले सुन्नत की ह़क़्क़ानिय्यत की गवाही देने लगा। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ मुझे दा'वते इस्लामी के मदनी माह़ोल में इस्तिक़ामत अ़त़ा फ़रमाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अमीरे अहले सुन्नत पर रह़मत हो और इन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुवे सुन्नत की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहनशाहे नबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत, नौशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा।

(مِشْکاةُ الْمَصابِیح،ج۱ص۵۵حدیث۱۷۵دارالکتب العلمیہ بیروت)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा
जन्नत में पड़ौसी मुझे तुम अपना बनाना

"बग़दाद का मुसाफ़िर" के बारह ह़ुरूफ़ की निस्बत से घर में आने जाने के 12 मदनी फूल

﴾1﴿ जब घर से बाहर निकलें तो येह दुआ़ पढ़िये :

"بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ" **तर्जमा : अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से, मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर भरोसा किया। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बिग़ैर न त़ाक़त है न क़ुव्वत। (ابوداود،ج۴ص۴۲۰حدیث۵۰۹۵)

اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ इस दुआ़ को पढ़ने की बरकत से सीधी राह पर रहेंगे, आफ़तों से ह़िफ़ाज़त होगी और اَللّٰهُ الصَّمَد عَزَّوَجَلَّ की मदद शामिले ह़ाल रहेगी।

﴾2﴿ घर में दाख़िल होने की दुआ़ :

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا۔

(ابوداود،ج۴،ص۴۲۰حدیث:۵۰۹۶)

(**तर्जमा :** ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं तुझ से दाख़िल होने की और निकलने की भलाई मांगता हूं, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नाम से हम (घर में) दाख़िल हुए और उसी के नाम से बाहर आए और अपने रब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर हम ने भरोसा किया) दुआ़ पढ़ने के बा'द घर वालों को सलाम करे फिर बारगाहे रिसालत में सलाम अ़र्ज़ करे इस के बा'द सूरतुल इख़्लास शरीफ़ पढ़े। اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ रोज़ी में बरकत, और घरेलू झगड़ों से बचत होगी।

﴾3﴿ अपने घर में आते जाते महारिम व महरिमात (मसलन मां, बाप, भाई, बहन, बाल बच्चे वग़ैरा) को सलाम कीजिये।

﴾4﴿ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिये बिग़ैर मसलन बिस्मिल्लाह कहे बिग़ैर जो घर में दाख़िल होता है शैत़ान भी उस के साथ दाख़िल हो जाता है।

﴾5﴿ अगर ऐसे मकान (ख़्वाह अपने ख़ाली घर) में जाना हो कि उस में कोई न हो तो येह कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن (या'नी हम पर और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों पर सलाम) फ़िरिश्ते उस सलाम का जवाब देंगे। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص ٦٨٢) या इस त़रह़ कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ (या'नी या नबी आप पर सलाम) क्यूंकि हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की रूह़े मुबारक मुसलमानों के घरों में तशरीफ़ फ़रमा होती है। (بہارِشریعت حصّہ۶، ص۹۶، شرح الشّفاء للقاری ج۲، ص۱۱۸)

﴾6﴿ जब किसी के घर में दाख़िल होना चाहें तो इस त़रह़ कहिये : اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ क्या मैं अन्दर आ सकता हूं ?

﴾7﴿ अगर दाख़िले की इजाज़त न मिले तो ब ख़ुशी लौट जाइये, हो सकता है किसी मजबूरी के तह़्त साह़िबे ख़ाना ने इजाज़त न दी हो।

﴾8﴿ जब आप के घर पर कोई दस्तक दे तो सुन्नत येह है कि पूछिये : कौन है ? बाहर वाले को चाहिये कि अपना नाम बताए : मसलन कहे : "**मुह़म्मद इल्यास।**" नाम बताने के बजाए इस मौक़अ़ पर "**मदीना!**", "**मैं हूं!**", "**दरवाज़ा खोलो**" वग़ैरा कहना सुन्नत नहीं।

﴾9﴿ जवाब में नाम बताने के बा'द दरवाज़े से हट कर खड़े हों ताकि दरवाज़ा खुलते ही घर के अन्दर नज़र न पड़े।

﴾10﴿ किसी के घर में झांकना मम्नूअ़ है। बा'ज़ लोगों के मकान के सामने नीचे की त़रफ़ दूसरों के मकानात होते हैं लिहाज़ा बालकूनी वग़ैरा से झांकते हुए इस बात का ख़याल रखना चाहिये कि उन के घरों में नज़र न पड़े।

﴾11﴿ किसी के घर जाएं तो वहां के इन्तिज़ामात पर बेजा तन्क़ीद न कीजिये इस से उस की दिल आज़ारी हो सकती है।

www.dawateislami.net

﴾12﴿ वापसी पर अहले ख़ाना के हक़ में दुआ भी कीजिये और शुक्रिया भी अदा कीजिये और सलाम भी और हो सके तो कोई सुन्नतों भरा रिसाला वग़ैरा भी तोहफ़तन पेश कीजिये ।

तरह् तरह् की हज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ़ दो कुतुब बहारे शरीअ़त हिस्सा **16** (**312** सफ़हात) नीज़ **120** सफ़हात की किताब "**सुन्नतें और आदाब**" हदिय्यतन हासिल कीजिये और पढ़िये । सुन्नतों की तर्बिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ दा'वते इस्लामी के मदनी क़ाफ़िलों में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है ।

सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो *लूटने रह्मतें क़ाफ़िले में चलो*
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो *पाओगे बरकतें क़ाफ़िले में चलो*

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में पढ़े जाने वाले 6 दुरूदे पाक

(1) शबे जुमुआ़ का दुरूद :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ وَسَلِّمْ وَبَارِكْ عَلٰى سَيِّدِنَا مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ الْحَبِيْبِ الْعَالِي الْقَدْرِ الْعَظِيْمِ الْجَاهِ وَعَلٰى اٰلِهٖ وَصَحْبِهٖ وَسَلِّمْ

बुज़ुर्गों ने फ़रमाया कि जो शख़्स हर शबे जुमुआ़ (जुमुआ़ और जुमा'रात की दरमियानी रात) इस दुरूद शरीफ़ को पाबन्दी से कम अज़् कम एक मरतबा पढ़ेगा मौत के वक़्त सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत करेगा और क़ब्र में दाख़िल होते वक़्त भी, यहां तक कि वोह देखेगा कि सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उसे क़ब्र में अपने रह्मत भरे हाथों से उतार रहे हैं। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰى سَيِّدِ السَّادات ص ۱۵۱ ملخصًا)

(2) तमाम गुनाह मुआ़फ़ : اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِهٖ وَسَلِّمْ

ह़ज़रते सय्यिदुना अनस رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जो शख़्स येह दुरूदे

www.dawateislami.net

पाक पढ़े अगर खड़ा था तो बैठने से पहले और बैठा था तो खड़े होने से पहले उस के गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे। (اَیضاً ص ٦٥)

(3) रह़मत के सत्तर दरवाज़े

صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

जो येह दुरूदे पाक पढ़ता है तो उस पर रह़मत के **70** दरवाज़े खोल दिये जाते हैं। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ٢٧٧)

(4) एक हज़ार दिन की नेकियां

جَزَی اللّٰہُ عَنَّا مُحَمَّدًا مَا ھُوَ اَھْلُہٗ

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : इस दुरूदे पाक को पढ़ने वाले के लिये सत्तर फ़िरिश्ते एक हज़ार दिन तक नेकियां लिखते हैं। (مَجْمَعُ الزَّوَائِد ج ١٠ ص ٢٥٤ حدیث ١٧٣٠٥)

(5) छे लाख दुरूद शरीफ़ का सवाब

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی سَیِّدِنَا مُحَمَّدٍ عَدَدَ مَا فِیْ عِلْمِ اللّٰہِ صَلَاۃً دَآئِمَۃً بِدَوَامِ مُلْکِ اللّٰہِ

ह़ज़रते अह़मदे सावी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی बा'ज़ बुज़ुर्गों से नक़्ल करते हैं : इस दुरूद शरीफ़ को एक बार पढ़ने से छे लाख दुरूद शरीफ़ पढ़ने का सवाब ह़ासिल होता है। (اَفْضَلُ الصَّلَوات عَلٰی سَیِّدِ السَّادات ص ١٤٩)

(6) कुर्बे मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ کَمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی لَہٗ

एक दिन एक शख़्स आया तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उसे अपने और सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के दरमियान बिठा लिया। इस से सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم को तअ़ज्जुब हुवा कि येह कौन ज़ी मर्तबा है ! जब वोह चला गया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह जब मुझ पर दुरूदे पाक पढ़ता है तो यूं पढ़ता है। (اَلْقَوْلُ الْبَدِیْع ص ١٢٥)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

www.dawateislami.net